International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-07-2025, Accepted: 12-08-2025, Published: 27-08-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 51-55

एकात्म मानव दर्शनः शिक्षा, न्याय और शासन में भारतीय जीवन–दृष्टि का समग्र दृष्टिकोण

विजय शाह[1], दीपिका शाह[1], ज्योतिंद्र माह्यावंशी[2]
[1] रसायन विज्ञान विभाग, नर्मदा कॉलेज ऑफ साइंस एंड कॉमर्स, भरूच (गुजरात), भारत
[2] रसायन विज्ञान विभाग, आरआर मेहता कॉलेज ऑफ साइंस और सीएल पारिख कॉलेज ऑफ कॉमर्स, पालनपुर, गुजरात, भारत

सारांश
एकात्म मानव दर्शन (Integral Humanism), पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एक गहन और भारतीय–केंद्रित विचारधारा है, जिसे 1965 में भारतीय जनसंघ (वर्तमान भारतीय जनता पार्टी) के आधिकारिक सिद्धांत के रूप में अपनाया गया था । यह दर्शन मानव जीवन और संपूर्ण प्रकृति के एकात्म संबंधों पर केंद्रित है, जिसमें मानव–जीवन के विविध अंगों और प्रकृति की विभिन्न शक्तियों में विविधता के बावजूद आंतरिक एकता पर बल दिया गया है । यह एक ऐसा व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण ब्रह्मांड के बीच अंतर्संबंधों को स्वीकार करता है, और इन सभी स्तरों पर संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

मूल शब्दः भारतीय–केंद्रित विचारधारा, वर्तमान भारतीय जनता पार्टी, समाज

प्रस्तावना

एकात्म मानव दर्शन का परिचय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन केवल एक राजनीतिक सिद्धांत नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को समाहित करने वाला एक समग्र जीवन दर्शन है। यह भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत में गहराई से निहित है, जो 'धर्म' के सिद्धांतों पर आधारित है । धर्म को जीवन के नियम और सद्भाव, शांति तथा प्रगति लाने वाले सिद्धांतों के रूप में देखा जाता है, जो व्यक्तिगत और सामूहिक आचरण का मार्गदर्शन करते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानव दर्शन की मूल अवधारणा एकात्म मानव दर्शन का मूल अर्थ मानव–जीवन और संपूर्ण प्रकृति के एकात्म संबंधों का दर्शन है । यह दर्शन व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर जोर देता है, जिसमें शरीर, मन, बुद्धि और आत्माकृये चारों अंग एक साथ विकसित हों । इन चारों के समुचित विकास के बिना किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण व संतुलित विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती । यह दर्शन इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक प्राणी में आत्मा का निवास होता है, जो उसी परमात्मा का अंश है, इसलिए प्राणी–प्राणी में कोई विभेद नहीं हो सकता; समरसता ही मूल है। एकात्म मानव दर्शन में व्यक्ति (व्यष्टि) से परिवार, परिवार से समाज (समष्टि), समाज से राष्ट्र, और फिर मानवता तथा चराचर सृष्टि तक सब एक ही सूत्र में गुंफित हैं । यह परस्पर विरोध और संघर्ष के स्थान पर पूरकता, अनुकूलता और सहयोग के आधार पर चलता है । इस दर्शन में 'चिति' (सामूहिक चेतना या राष्ट्रीय आत्मा) और 'विराट' (सामाजिक संस्थानों में राष्ट्रीय संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति) जैसी भारतीय अवधारणाएँ महत्वपूर्ण हैं, जो राष्ट्र की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं।

एकात्म मानव दर्शन का मूल सिद्धांत

मनुष्य चार स्तरों पर जीता हैः
शरीर (भौतिक आवश्यकताएं – भोजन, वस्त्र, आवास)
मन (भावनाएं, संवेदनाएं)
बुद्धि (विवेक, ज्ञान, तर्क)
आत्मा (आध्यात्मिक चेतना)
विकास का अर्थ है इन चारों का संतुलित और समन्वित उत्कर्ष।
समाज और व्यक्ति का संबंधः
व्यक्ति समाज से अलग नहीं है, और समाज भी व्यक्ति के बिना नहीं है। अतः विकास ऐसा हो जो व्यक्ति और समाज दोनों के हित में हो।

पश्चिमी विचारधाराओं (पूंजीवाद, समाजवाद, व्यक्तिवाद) से भिन्नता

एकात्म मानव दर्शन पश्चिमी पूंजीवादी व्यक्तिवाद और मार्क्सवादी समाजवाद दोनों का मुखर विरोध करता है । उपाध्याय का तर्क है कि ये विचारधाराएँ केवल शरीर और मन की आवश्यकताओं पर केंद्रित हैं और भौतिकवादी उद्देश्यों (काम और अर्थ) पर आधारित हैं, जिससे मानव का सर्वांगीण विकास बाधित होता है । उन्होंने व्यक्तिवाद को अस्वीकार किया, जहाँ व्यक्ति सर्वोच्च होता है, और साम्यवाद को भी अस्वीकार किया, जहाँ व्यक्ति को एक 'बड़ी हृदयहीन मशीन' का हिस्सा मानकर कुचला जाता है। पश्चिमी विचार संघर्ष और द्वंद्व पर आधारित हैं (व्यक्ति बनाम समूह, प्रकृति बनाम मानव, आध्यात्मिकता बनाम धर्मनिरपेक्षता), जबकि एकात्म मानव दर्शन समन्वय और पूरकता पर जोर देता है । यह पश्चिमी विज्ञान का स्वागत करता है, लेकिन पश्चिमी जीवनशैली और मूल्यों की अंधानुकरण से बचने की सलाह देता है, क्योंकि यह भारत के लिए उपयुक्त नहीं है ।

सर्वांगीण मानव विकास की अवधारणाः शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संतुलन

उपाध्याय के अनुसार, मानव जाति के चार पदानुक्रमित गुण हैंः शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा, जो जीवन के चार सार्वभौमिक उद्देश्योंकृधर्म (नैतिक कर्तव्य), अर्थ (धन), काम (इच्छा), और मोक्ष (पूर्ण मुक्ति)कृके अनुरूप हैं । इनमें से किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती; धर्म 'आधारभूत' है और मोक्ष 'अंतिम' लक्ष्य है । यह भौतिक विकास के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास को भी आवश्यक मानता है, क्योंकि इनके समुचित विकास के बिना मनुष्य के सर्वांगीण व संतुलित विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।
एकात्म मानव दर्शन एक "तीसरा मार्ग" के रूप में प्रस्तुत होता है, जो पश्चिमी पूंजीवाद और मार्क्सवादी समाजवाद दोनों से परे है। यह केवल इन विचारधाराओं की आलोचना नहीं करता, बल्कि एक सक्रिय विकल्प का प्रस्ताव करता है, जिसे "मध्य मार्ग" कहा गया है । यह दृष्टिकोण एकात्म मानव दर्शन को एक स्थिर

सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि एक गतिशील ढाँचे के रूप में स्थापित करता है, जिसे अन्य प्रमुख वैश्विक विचारधाराओं में निहित संघर्षों को हल करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह विशेष रूप से ऐसे विश्व में प्रासंगिक है जो अत्यधिक पूंजीवाद (असमानता, पर्यावरणीय गिरावट) और कठोर समाजवाद (व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कमी) दोनों की अतिरेकों से जूझ रहा है। यह अपने सांस्कृतिक संदर्भ से परे व्यापक अपील की संभावना को इंगित करता है, क्योंकि यह एक अद्वितीय, गैर–द्वैतवादी दृष्टिकोण से सार्वभौमिक मानवीय दुविधाओं को संबोधित करने का प्रयास करता है।

'चिति' की अवधारणा, जिसे "राष्ट्रीय आत्मा" या "लोकाचार" के रूप में प्रस्तुत किया गया है , राजनीतिक संरचनाओं से परे एक मार्गदर्शक लोकाचार के रूप में कार्य करती है। इसे कार्यों का मूल्यांकन करने और राष्ट्र की नींव के मानक के रूप में वर्णित किया गया है । यह एक राष्ट्र–राज्य की मात्र राजनीतिक परिभाषा से परे है । यह एक गहरा, सांस्कृतिक–आध्यात्मिक आधार है, जो सुझाव देता है कि राष्ट्र की पहचान और दिशा केवल उसकी सरकारी संरचना या आर्थिक नीतियों से निर्धारित नहीं होती, बल्कि एक गहरी, अंतर्निहित सांस्कृतिक चेतना से होती है। यह 'चिति' एक नैतिक कम्पास के रूप में कार्य करती है, यह सुनिश्चित करती है कि विकास और शासन राष्ट्र के अद्वितीय चरित्र और मूल्यों के अनुरूप हों, न कि आँख बंद करके विदेशी मॉडलों की नकल करें। यह सांस्कृतिक संरक्षण और मानसिकता के विऔपनिवेशीकरण के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है , राष्ट्रीय पहचान को एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल से जोड़ता है।

2. शिक्षा के क्षेत्र में एकात्म मानव दर्शन की भूमिका

एकात्म मानव दर्शन शिक्षा को मानव के सर्वांगीण विकास और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखता है। यह केवल अकादमिक ज्ञान के अधिग्रहण से कहीं अधिक है, बल्कि इसमें नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक पहलुओं का एकीकरण भी शामिल है।

शिक्षा के लक्ष्यः सर्वांगीण विकास और आध्यात्मिक उन्नति

एकात्म मानव दर्शन के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का सर्वांगीण और संतुलित विकास करना है । यह केवल भौतिक या बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति को भी उतना ही आवश्यक मानता है । यह दर्शन शिक्षा को व्यक्ति के 'पुरुषार्थ चतुष्टय ' (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति का साधन मानता है, जिसमें धर्म और नैतिक मूल्यों का पालन महत्वपूर्ण है । शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन जीने और समाज में योगदान करने में सक्षम बनाना है, जिससे वह अपनी आजीविका कमा सके और सम्मान के साथ जी सके ।

भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित शिक्षा

एकात्म मानव दर्शन भारतीय सांस्कृतिक विरासत और 'धर्म' के सिद्धांतों पर आधारित शिक्षा की वकालत करता है, जो नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित हो । यह पश्चिमी शिक्षा प्रणालियों की आलोचना करता है जो केवल भौतिकवादी पहलुओं पर केंद्रित हैं और भारतीय मूल्यों की उपेक्षा करती हैं । समाज का कर्तव्य है कि वह समाज के अंतिम व्यक्ति को शिक्षित करे और उसे सम्मानजनक जीवन जीने में सक्षम बनाए ।

शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण और आत्म– साक्षात्कार

मानववादी शिक्षा सिद्धांत व्यक्ति के विकास पर केंद्रित है, जिसमें शिक्षार्थी को अपनी सीखने की प्रक्रिया का "अधिकार" माना जाता है । यह छात्रों को अपनी रुचियों और क्षमताओं को खोजने के माध्यम से पूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने में मदद करने पर जोर देता है, बजाय उन्हें पूर्वनिर्धारित रूपों में ढालने के । शिक्षकों की भूमिका एक सुविधाप्रदाता और प्रेरक की होती है, जो छात्रों में जिज्ञासा और सीखने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देते हैं । आत्म–मूल्यांकन को पारंपरिक ग्रेडिंग से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, जिससे छात्र आंतरिक प्रेरणा से सीखते हैं ।

मातृभाषा में शिक्षा का महत्व और औपनिवेशिक मानसिकता का विऔपनिवेशीकरण

उपाध्याय ने मातृभाषा में शिक्षा का समर्थन किया और अंग्रेजी का विरोध किया, क्योंकि यह भारतीय राष्ट्रीय स्वभाव के अनुरूप नहीं है और वर्ग भेद पैदा करती है । यह भारतीय मानसिकता के "विऔपनिवेशीकरण" पर जोर देता है, जिसमें संस्कृत और विरासत को महत्व दिया जाता है, और विचारों के स्वराज की बात की जाती है । औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली ने भारतीय भाषाओं के महत्व को कम किया और अंग्रेजी शिक्षा का प्रभुत्व स्थापित किया, जिससे आम लोगों और नीति निर्माताओं के बीच खाई पैदा हुई । नई शिक्षा नीति 2020 को इस मानसिकता को बदलने की दिशा में एक कदम के रूप में देखा जा सकता है । एकात्म मानव दर्शन बनाम पश्चिमी शिक्षा के लक्ष्यद्य

मानदंड (Criterion)	एकात्म मानव दर्शन (Integral Humanism)	पश्चिमी शिक्षा (Western Education)
शिक्षा का लक्ष्य	सर्वांगीण विकास (शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा)	भौतिक/बौद्धिक विकास, व्यावसायिक कौशल
विकास का फोकस	आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति	अक्सर धर्मनिरपेक्ष/व्यक्तिवादी सफलता
आध्यात्मिकता/मूल्यों की भूमिका	अभिन्न (पुरुषार्थ चतुष्टय, धर्म)	अक्सर अलग या व्यक्तिगत
व्यक्ति/समाज के प्रति दृष्टिकोण	एकात्म (व्यष्टि से परमेष्टि तक अंतर्संबंध)	व्यक्तिवादी (व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर जोर)
पाठ्यक्रम पर जोर	आत्म–खोज, रचनात्मकता, सांस्कृतिक जड़ें	पूर्वनिर्धारित पाठ्यक्रम, तथ्यात्मक ज्ञान
शिक्षक की भूमिका	सुविधाप्रदाता, प्रेरक, नैतिक रोल मॉडल	सूचना प्रदाता, अनुशासनकर्ता
मूल्यांकन विधि	आत्म–मूल्यांकन, समग्र प्रगति	पारंपरिक ग्रेडिंग, रटने पर आधारित परीक्षण
सांस्कृतिक संदर्भ	भारतीय लोकाचार में निहित, मातृभाषा को महत्व	सार्वभौमिक ढाँचे, अंग्रेजी/प्रमुख भाषा का प्रभुत्व

शिक्षा सांस्कृतिक पुनरुत्थान और विऔपनिवेशीकरण का एक माध्यम है। एकात्म मानव दर्शन स्पष्ट रूप से शिक्षा को "विऔपनिवेशीकरण" और संस्कृत तथा विरासत को महत्व देने से जोड़ता है । अंग्रेजी शिक्षा द्वारा वर्ग भेद पैदा करने की आलोचना और मातृभाषा पर जोर यह सुझाव देता है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने के बारे में नहीं है, बल्कि स्वदेशी मूल्यों में निहित राष्ट्रीय पहचान को आकार देने के बारे में है। औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली ने भारतीय विचारों को सक्रिय रूप से कम किया, इसलिए एकात्म मानव दर्शन के तहत शैक्षिक नीति सांस्कृतिक प्रामाणिकता और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को प्राथमिकता देगी। इससे पाठ्यक्रम सुधार हो सकते हैं जो पारंपरिक भारतीय मनोविज्ञान (त्रिगुण सिद्धांत, पंचकोष मॉडल) और सहानुभूति–निर्माण गतिविधियों को एकीकृत करते हैं । यह केवल अकादमिक उपलब्धि से परे सांस्कृतिक गौरव और अपनेपन की भावना को विकसित करने पर केंद्रित है।

व्यक्तिगत और सामाजिक शैक्षिक प्रगति की अंतर्निर्भरता एकात्म मानव दर्शन का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। जबकि पश्चिमी मानवतावाद व्यक्तिवाद और आत्म–साक्षात्कार पर जोर देता है , एकात्म मानव दर्शन स्पष्ट रूप से कहता है कि व्यक्ति की प्रगति समाज की प्रगति से जुड़ी हुई है ("व्यक्ति का विकास होगा तो समाज विकसित होगा") । "सामाजिक व्यवस्था घन" (social order cube) इस लेन–देन को दर्शाता है, जहाँ समाज शिक्षित करता है और व्यक्ति कर्तव्यों का पालन करता है। यह सुझाव देता है कि एकात्म मानव दर्शन के तहत शैक्षिक नीति न केवल व्यक्तिगत शिक्षार्थी की आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करेगी, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी, सहयोग और सामूहिक कल्याण की भावना को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित करेगी। इसका तात्पर्य एक ऐसे पाठ्यक्रम से है जो छात्रों को व्यापक सामाजिक ताने–बाने के भीतर अपनी भूमिका को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है, शिक्षा के माध्यम से अंत्योदय (सबसे कमजोर का उत्थान) जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है, यह सुनिश्चित करता है कि सीखने के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचें । यह विशुद्ध रूप से व्यक्तिवादी शैक्षिक परिणामों के विपरीत है।

3. न्याय प्रणाली में एकात्म मानव दर्शन का प्रभाव

एकात्म मानव दर्शन न्याय को केवल कानूनी प्रक्रिया तक सीमित नहीं मानता, बल्कि इसे सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्यों और मानवाधिकारों की एकात्मवादी व्याख्या के माध्यम से एक व्यापक अवधारणा के रूप में देखता है। इसका उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ सभी व्यक्तियों को गरिमा और समानता के साथ व्यवहार किया जाए।

सामाजिक न्याय और समरसता की अवधारणा

एकात्म मानव दर्शन सामाजिक सद्भाव और समाज के विभिन्न वर्गों के एकीकरण को बढ़ावा देने पर जोर देता है, जिसमें अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों को संबोधित करना और उनका उन्मूलन करना शामिल है । यह सामाजिक समरसता को दर्शन के मूल में मानता है, जिसमें जाति व्यवस्था को बाधक बताया गया है । यह 'अंत्योदय' (समाज के सबसे कमजोर और हाशिए पर पड़े सदस्यों का उत्थान) के सिद्धांत पर केंद्रित है, जिसका अर्थ है कि प्रगति का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए । यह 'सबका साथ, सबका विकास' के सिद्धांत का आधार है, जिसमें व्यक्ति के विकास के साथ–साथ सामूहिक जीवन के हित का विरोध कभी न हो । न्याय, समानता और बंधुत्व पर जोर देते हुए एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में नैतिक और नैतिक मूल्यों का महत्व रेखांकित किया गया है ।

धर्म–आधारित न्याय और नैतिक मूल्य

एकात्म मानव दर्शन में 'धर्म' नैतिक और नैतिक सिद्धांतों को समाहित करता है जो मानवीय आचरण का मार्गदर्शन करते हैं और समाज को बनाए रखते हैं । न्याय प्रणाली को धर्म में निहित होना चाहिए, अर्थ (धन) और काम (इच्छा) के बीच संतुलन सुनिश्चित करना चाहिए, जिसमें धर्म और मोक्ष को विनाश को रोकने के लिए सीमाओं के रूप में कार्य करना चाहिए । पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए ईमानदारी को नीति के बजाय सिद्धांत का विषय माना जाता है ।

मानवाधिकार और गरिमापूर्ण जीवन

एकात्म मानव दर्शन आधुनिक मानवाधिकार अवधारणाओं के साथ संरेखित होता है, जो जीवन रूपों की आंतरिक एकता और सभी के लिए समान अधिकारों पर जोर देता है । यह प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करने पर केंद्रित है । यह मृत्युदंड, कैदी दुर्व्यवहार और उच्च कारावास दरों जैसी प्रथाओं को अस्वीकार करता है, क्योंकि ये मानवीय व्यवहार की उपेक्षा करते हैं । यह अपने चुने हुए मार्ग (धर्म) का पालन करने की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, दूसरों के प्रति सहिष्णुता के साथ ।

न्याय का एक समग्र, धर्म–आधारित दृष्टिकोण, केवल कानूनी नहीं, एकात्म मानव दर्शन का एक केंद्रीय पहलू है। यह न्याय को केवल कानूनी प्रक्रियाओं या दंड तक सीमित नहीं रखता, बल्कि इसे धर्म में निहित एक व्यापक अवधारणा के रूप में देखता है, जिसमें नैतिक कर्तव्य, सामाजिक समरसता और पुरुषार्थों का संतुलन शामिल है। इसका अर्थ है कि न्याय केवल अपराधों को दंडित करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक ऐसे समाज को बढ़ावा देने के बारे में है जहाँ व्यक्ति और सामूहिक रूप से नैतिक रूप से समृद्ध हों। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि कानूनी ढाँचा समाज के गहरे नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा हो, जिससे एक अधिक सामंजस्यपूर्ण और न्यायपूर्ण व्यवस्था का निर्माण हो सके।

'अंत्योदय' सामाजिक न्याय के एक सक्रिय सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। यह एकात्म मानव दर्शन का एक व्यावहारिक अनुप्रयोग है, जो समाज के सबसे कमजोर और हाशिए पर पड़े सदस्यों के उत्थान पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है। यह इस विचार पर आधारित है कि समाज की सच्ची प्रगति तब तक संभव नहीं है जब तक उसके सबसे कमजोर वर्ग की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जाता । यह नीतियों को आर्थिक असमानता को सक्रिय रूप से संबोधित करने और सभी के लिए बुनियादी आवश्यकताओं को सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे शासन के प्रति एक अधिक करुणामय और समावेशी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। यह केवल अधिकारों की घोषणा नहीं है, बल्कि उन अधिकारों को वास्तविकता में बदलने के लिए ठोस प्रयासों पर जोर देता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो सबसे अधिक वंचित हैं।

4. गवर्नेंस के क्षेत्र में एकात्म मानव दर्शन की भूमिका

एकात्म मानव दर्शन गवर्नेंस को केवल सत्ता के संचालन या प्रशासनिक दक्षता के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे मानव–केंद्रित, मूल्य–आधारित और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित एक प्रक्रिया के रूप में देखता है। यह एक ऐसे शासन की परिकल्पना करता है जो व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण कल्याण को सुनिश्चित करता है।

मानव–केंद्रित और मूल्य–आधारित शासन

एकात्म मानव दर्शन सभी विकास मॉडलों के केंद्र में मानव को रखता है, जिसमें गवर्नेंस को व्यक्तिगत कल्याण और गरिमा की सेवा के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए । यह नैतिक गवर्नेंस की वकालत करता है, जो करुणा, संयम और सद्भाव को बढ़ावा देता है । सरकार की भूमिका जनता के संरक्षक और उनकी बुनियादी जरूरतों तथा सामाजिक–आर्थिक विकास के सुविधाप्रदाता के रूप में देखी जाती है।

विकेंद्रीकरण और स्वदेशी आर्थिक मॉडल

एकात्म मानव दर्शन विकेंद्रीकृत व्यवस्था का समर्थन करता है, आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के केंद्रीकरण का विरोध करता है । यह एक स्वदेशी आर्थिक मॉडल, छोटे पैमाने के औद्योगीकरण और ग्रामीण विकास (स्वदेशी, ग्राम स्वराज) की वकालत करता है । यह नेहरूवादी आर्थिक नीतियों की आलोचना करता है क्योंकि वे पश्चिमी विचारों का अंधानुकरण करती थीं और उपभोक्तावाद को बढ़ावा देती थीं । उपाध्याय का मानना था कि शासन को व्यापार नहीं करना चाहिए और व्यापारी के हाथ में शासन नहीं आना चाहिए, क्योंकि आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का एक

स्थान पर जमा होना लोकतंत्र के खिलाफ है । सरकार को उन्हीं क्षेत्रों में काम करना चाहिए जहाँ समाज जोखिम नहीं लेता ।

नीति निर्माण और नागरिक भागीदारी

नीति और गवर्नेंस को प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण और गरिमा की सेवा के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए । यह सहभागी लोकतंत्र को बढ़ावा देता है, जहाँ लोगों को अपने भाग्य को आकार देने में सीधी आवाज मिलती है । लोकतंत्र की प्रभावशीलता राष्ट्र के प्रति लोगों की भावना, जिम्मेदारी की चेतना और अनुशासन पर निर्भर करती है । पारदर्शी गवर्नेंस के लिए ईमानदारी और जवाबदेही महत्वपूर्ण है । यह राष्ट्रवाद को विश्व शांति के लिए खतरा मानने वाले विचारों को खारिज करता है और राष्ट्रीय रक्षा तथा अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन को बढ़ावा देता है ।

एकात्म मानव दर्शन 'राज्य' को एक नैतिक सुविधाप्रदाता के रूप में देखता है, न कि केवल एक संप्रभु सत्ता के रूप में। यह राज्य की भूमिका को एक coercive या कल्याण प्रदाता से मानव उत्कर्ष के एक नैतिक और सांस्कृतिक सुविधाप्रदाता के रूप में पुनः परिभाषित करता है। इसका अर्थ है कि गवर्नेंस को मानव विकास को पोषित करना चाहिए और धर्म के साथ संरेखित होना चाहिए, जिसका तात्पर्य ऐसी नीतियों से है जो नैतिक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हों, न कि केवल उपयोगितावादी। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि शासन केवल भौतिक प्रगति पर ध्यान केंद्रित न करे, बल्कि समाज के नैतिक और आध्यात्मिक ताने–बाने को भी मजबूत करे।

स्वदेशी और विकेंद्रीकरण एक वैश्विकृत विश्व में लचीलेपन के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियाँ हैं। एकात्म मानव दर्शन स्वदेशी और विकेंद्रीकरण को वैश्विक आर्थिक उतार–चढ़ाव और सांस्कृतिक क्षरण के खिलाफ लचीलेपन के लिए व्यावहारिक रणनीतियों के रूप में प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण बताता है कि जबकि वैश्विक एकीकरण एक वास्तविकता है, नीतियों को स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक संरक्षण को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे विकास के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिले। यह केंद्रीकृत, शीर्ष–डाउन मॉडलों के विपरीत, स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान विकसित करने पर जोर देता है, जिससे एक अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत विकास होता है।

आर्थिक चिंतन

एकात्म मानव दर्शन का आर्थिक चिंतन पाश्चात्य पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों से भिन्न है। यह कुछ प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित हैः

मानव केंद्रित विकासः इस दर्शन में मानव ही सभी व्यवस्थाओं का केंद्र है। आर्थिक नीतियों का उद्देश्य केवल भौतिक सुख–सुविधाओं का संचय नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और उसकी गरिमा को सुनिश्चित करना है। इसमें शरीर के साथ–साथ मन, बुद्धि और आत्मा के विकास को भी महत्व दिया जाता है।

समग्रता और संतुलनः यह अर्थ (धन) और काम (भोग) को धर्म (नैतिकता) और मोक्ष (मुक्ति) के साथ जोड़ता है। इसका अर्थ है कि आर्थिक गतिविधियाँ नैतिक मूल्यों और सामाजिक कल्याण से बंधी होनी चाहिए, ताकि धन का अनियंत्रित प्रवाह विनाश का कारण न बने।

स्वदेशी और आत्मनिर्भरताः एकात्म मानव दर्शन अपनी राष्ट्रीय पहचान, 'चिति' (विशिष्ट सांस्कृतिक मूल भावना) के आधार पर विकास की रणनीति बनाने पर जोर देता है। यह बाहरी विचारों का अंधानुकरण करने के बजाय, अपनी परिस्थितियों और संसाधनों के अनुकूल विकास मॉडल अपनाने की बात करता है। आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देना इसका एक महत्वपूर्ण पहलू है।

अंतिम व्यक्ति का उत्थान (अंत्योदय): इस दर्शन का एक मुख्य सिद्धांत 'अंत्योदय' है, जिसका अर्थ है समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति का उत्थान। आर्थिक नीतियां ऐसी होनी चाहिए जो निर्धन, वंचित और शोषित वर्ग को विकास की मुख्य धारा में ला सकें और उन्हें न्यूनतम जीवन स्तर का आश्वासन दे सकें।

उत्पादन, वितरण और उपभोग में संतुलनः दीनदयाल जी आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाने, समान वितरण करने और संयमित उपभोग पर जोर देते थे। उनका मानना था कि इन तीनों में संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। राज्य की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो सामान्य नियोजन, निर्देशन, नियमन और नियंत्रण का दायित्व निभाता है।

प्रकृति के साथ सामंजस्यः एकात्म मानव दर्शन प्रकृति का अंधाधुंध दोहन करने के बजाय उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने पर बल देता है। यह सतत विकास की अवधारणा का समर्थन करता है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस तरह से किया जाए कि वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध रहें।

विकास की परिकल्पना

एकात्म मानव दर्शन के अनुसार विकास की परिकल्पना केवल जीडीपी वृद्धि या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र और संतुलित विकास हैः

सर्वांगीण मानव विकासः विकास का अर्थ केवल भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पहलुओं का संतुलित विकास है। शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और नैतिक मूल्यों को आर्थिक विकास के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

समाज केंद्रित विकासः व्यक्ति के साथ–साथ परिवार, समाज, राष्ट्र और अंततः संपूर्ण मानवता का कल्याण सुनिश्चित करना। विकास ऐसी प्रक्रिया होनी चाहिए जो समाज में एकता, ममता, समता और बंधुता को बढ़ावा दे।

सतत और पर्यावरण–अनुकूल विकासः प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग और पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया जाता है। विकास ऐसा हो जो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करे, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों की क्षमताओं से समझौता न करे।

रोजगार सृजन और आय का समान वितरणः प्रत्येक सक्षम नागरिक को सार्थक रोजगार प्रदान करना और आय के वितरण में असमानताओं को कम करना विकास का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। कुटीर उद्योगों और कृषि के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

ग्राम स्वराज्य और विकेंद्रीकरणः यह दर्शन ग्राम स्वराज्य की अवधारणा का समर्थन करता है, जिसमें स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने और विकास की प्रक्रियाओं में लोगों की सक्रिय भागीदारी हो।

नैतिकता और धर्म आधारित अर्थव्यवस्थाः आर्थिक व्यवहार को आध्यात्मिक मूल्यों के साथ समावेश करने से एक खुशहाल समाज का उदय होगा। धन को केवल 'अर्थ' के रूप में नहीं, बल्कि 'धर्म' के अनुसार उपयोग किया जाना चाहिए।

व्यावहारिक रूप में विकास का मॉडल

ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था (गांधीजी की ग्राम स्वराज की भावना के अनुरूप)

स्वावलंबी उद्योग (MSME] कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प)

समान अवसर और सामाजिक न्याय (जाति, लिंग, वर्ग भेद मिटाना)

शिक्षा में जीवन–मूल्यों का समावेश

जनकल्याणकारी शासन जो निर्णय लेते समय सांस्कृतिक, नैतिक और पर्यावरणीय पहलुओं को प्राथमिकता दे।

संदर्भ

1 दीनदयाल उपाध्याय. (1965). एकात्म मानव दर्शन. भारतीय जनसंघ प्रकाशन.
2 क्रिस्टोफ़ जेफ़रेलो. (1999). हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन और भारतीय राजनीति. पेंगुइन बुक्स.
3 एस. गुरुमूर्ति. (2018). एकात्म मानववादः भारतीय जीवन पद्धति. भारतीय शिक्षण मंडल.
4 एम. एस. गोलवलकर. (1966). बंच ऑफ थॉट्स. साहित्य सिंधु प्रकाशन.
5 आर. के. शर्मा. (2002). एकात्म मानववाद और समकालीन भारतीय चिंतन. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.
6 भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार.
7 के. एम. पणिक्कर. (1963). न्यू इंडिया की नींव. एलेन एंड अनविन.
8 डी. थेंगड़ी. (1995). – थर्ड वेः एकात्म मानववाद और हिंदू अर्थशास्त्र. सुरुचि प्रकाशन.
9 के. एस. बाजपेयी. (2001). दीनदयाल उपाध्यायः व्यक्ति और उनका दृष्टिकोण. दीनदयाल शोध संस्थान.